Karm/ **कर्म**

किसी भी क्रिया को करना या उसका होना कर्म कहलाता है, साथ ही प्रत्येक कर्म का फल भी संलग्न हो जाता है, जो पुण्य कर्म के फल को सुख और पाप कर्म के फल को दुख के रूप में कर्म का बोध कराता है। वे सभी स्वभाविक क्रियाएं या बिना मन से प्रेरित कर्म किसी भी प्रकार के पुण्य कर्म या पाप कर्म की श्रेणी में नही आते, जैसे मरना शरीर का स्वभाविक कर्म है इसलिए यह कर्म पुण्य कर्म या पाप कर्म की श्रेणी में नही आता है। जबकि मन से प्रेरित होकर जो कर्म किया जाता है उसे पुण्य कर्म या पाप कर्म की श्रेणी में रखा जाता है, इसीलिए मन से प्रेरित कर्म बंधंन का कारण भी होते हैं।

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते है **"न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्य कर्मकृत। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः"।।** अर्थात निसन्देह मनुष्य एक पल के लिए बिना कर्म के नही रह सकता क्योंकि सारा मनुष्य समुदाय प्रकृतिजन्य गुणो द्वारा परवश हुआ है इसलिए कर्म करने के लिए बाध्य है कर्म करना और कर्म करते रहना यह मनुष्य का प्राकृतिक गुण है इससे स्पष्ट है कि मनुष्य बिना कर्म के नही रह सकता और यदि कर्म हुआ तो कर्म फल भी अवश्य ही होगा। याद रखने वाली बात यह है कि कर्म फल की प्राप्ति उसी को होगी जिस मनुष्य ने कर्म किया है। जातक कर्म किस प्रकार के करेगा (शुभ कर्म या अशुभ कर्म), दोनों प्रकार के कर्म करने के लिए वह पूरी तरह से स्वतंत्र है पर उसका फल भोगने के लिए पूरी तरह से बाध्य है। प्रत्येक कर्म का अपना–अपना एक फल (परिणाम) होता है। कर्म फल जब तक भोग न लिया जाएं तब तक कर्म फल नष्ट नही होता चाहे सौ कल्प भी बीत जाएं। इसलिए जातक या जातिका को अच्छे कर्म करने चाहिये। महाभारत में एक अच्छा श्लोक मिलता है **यथा धेनु सहस्त्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्। तथा पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति।।** अर्थात हजारों गायों के बीच में जिस प्रकार बछड़ा अपनी माँ को ढूँढ लेता है उसी प्रकार से हजारों जन्मों पहले किये गये कर्मो का फल भी हमें ढूंढ लेता है।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्.गोस्त्वकर्मणि।।"** अर्थात हमारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल में बिलकुल नही, तू कर्मफल का कारण कभी न हो, न ही कर्त्तव्य न करने में तेरी आसक्ति हो। यदि हमने कर्म किया है तो हम चाहें या न चाहें कर्म फल हमे भोगना ही पड़ेगा।

कर्म तीन प्रकार के होते हैं **(1) संचित कर्म–ये** वे कर्म हैं जो हमने अपने पिछले कई जन्मों में किए हैं पर उनका फल (अच्छा या बुरा दोनो ही) अभी तक हमने नही भोगा है और अभी उन कर्मो का फल भोगना शेष है जो हमे जन्म पत्रिका में दिखाई देते हैं उसे संचित कर्म कहते हैं। जन्म पत्रिका में **पंचम भाव और पंचमेश** से संचित कर्मो का पता चलता हैं।

(2) प्रारब्ध कर्म– ये वे कर्म हैं जो ग्रहों और गोचर के अनुसार हमें हमारे संचित कर्मो में से इस जन्म में उनका कुछ शुभ या अशुभ फल भोगना पड़ता है। अच्छा ग्रह और गोचर होगा तो अच्छे कर्मो का अच्छा फल भोगने को मिलता है, पर यदि ग्रह और गोचर अच्छा नही है तो बुरे कर्मो का बुरा फल भोगने को मिलता है। जन्म पत्रिका में **नवम् भाव और नवमेश** से **प्रारब्ध कर्मो** का पता चलता है।

यहाँ **प्रारब्ध और पुरूषार्थ** को समझना अनिर्वाय है, प्रारब्ध या भाग्य तो जातक के जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है जबकि पुरूषार्थ या कर्म जातक जन्म लेने के बाद ही कर सकता है। इससे स्पष्ट है कि जातक का पुरूषार्थ या कर्म उसके प्रारब्ध या भाग्य की डोरी से बँधा हुआ है जैसे आपका जन्म किस परिवार में होगा (अमीर या गरीब), आपको कैसे माता–पिता मिलेंगे, आपके भाई या बहन कितने होंगे, कैसे होंगे, परिवार में आपका सबसे बड़ा या छोटा होना आदि सभी बातें आपके प्रारब्ध या भाग्य को दिखाती है यहां पर पुरूषार्थ या कर्म का कोई लेना–देना नही है और इन्ही सभी बातों से हम पूरे जीवन भर प्रभावित रहते हैं।

(3) क्रियमान कर्म या आगामी कर्म– ये वे कर्म हैं जो व्यक्ति इस जन्म में करता है और उनका फल भी साथ ही साथ भोगता जाता है पर यदि कर्म का भोग फल व्यक्ति की आयु से बड़ा हो और आयु छोटी हो तो वह कर्म फल इस जन्म में नही अपितु अगले किसी जन्म में भोगने के लिए संचित कर्म में जाकर जमा हो जाता है। जैसे किसी व्यक्ति का जन्म से ही करोड़ पति होना या जन्म से ही दरिद्र होकर जगह–जगह ठोकरे खाना।

अक्सर देखा गया है कि कई व्यक्ति पूरी तरह से तन, मन और धन लगाकर एक कार्य को एक लम्बे समय तक करते रहते हैं पर उनको उसका पूर्ण फल प्राप्त नही होता क्योकि उनकी ग्रहदशा और गोचर उनके अनुकूल नही होते। इसका अर्थ यह नही कि उस कर्म का कोई फल नही है, उस कर्म को संचित कर्म में जोड़ दिया जाता है और अगले किसी जन्म मे उनका पूर्ण फल भोगने को मिलेगा। ऐसा भी देखने में आता है कि कुछ व्यक्ति अल्प प्रयत्न से ही बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि दशा और ग्रहों का गोचर उनके अनुकूल होता है और पूर्व जन्म के शुभ कर्मो का शुभ फल भोगने को मिल जाता है। जन्म पत्रिका के **दशम् भाव या दशमेश** से **क्रियमान कर्म या आगामी कर्म** (अगले जन्म में फलित होने वाले कर्म) का पता चलता है।

वेदों में सबसे अधिक मंत्र कर्मकाण्ड के हैं, कर्म काण्ड के अनुसार कर्म पाँच प्रकार के हैं।

(1) नित्य कर्म– रोज किये जाने वाले कर्मो को नित्य कर्म कहा जाता है जैसे शरीर, मन, समाज, पर्यावरण आदि को शुद्ध और सुरक्षा करने के लिए किये जाने वाले कर्म नित्य कर्म हैं।

(2) नैमित्तिक कर्म– किसी विशेष कारण से किये जाने वाले कर्म नैमित्तिक कर्म कहे जाते हैं जैसे षोड़श संस्कार आदि।

(3)काम्य कर्म– किसी विशेष कामना की पूर्ती के लिए किये जाने वाले कर्म काम्य कर्म कहलाते हैं जिसमें हमारी लौकिक या परालौकिक इच्छाएं जुड़ी होती हैं जैसे संतान प्राप्ति या मोक्ष पाने के लिए किये जाने वाले पूजा पाठ अनुष्ठान आदि।

(4) निषिद्ध कर्म– शास्त्रों ने जिन कर्मो को वर्जित कहा है उसे निषिद्ध कर्म कहते हैं जिसके करने से मनुष्य विनाश (पतन) की ओर बढता है जैसे संगोत्रीय विवाह, अपने से कमजोर व्यक्ति का शोषण करना आदि।

(5) प्रायश्चित कर्म– वे कर्म हैं जो शास्त्रोक्त नही थे पर कर दिये और अब ग्लानि पैदा करते हैं इस ग्लानि से छुटकारा पाने या बचने के लिए जो कर्म किये जाते हैं उन्हें प्रायश्चित कर्म कहते हैं ।

यदि आपको विश्वस्त रूप से समझ में आ जाए कि जिस प्रकार की भी परेशानियों या कष्टों को आप भोग रहे हैं या सामना कर रहे हैं उसके लिए केवल आप के कर्म ही जिम्मेदार हैं तो आप दूसरों को दोष देना छोड़कर अपना पूरा समय (100% Time) अपने कर्मो को ठीक करने में लगा सकते हैं। यही कार्य हम ज्योतिष शास्त्र की मदद से आपके लिए करते हैं, कि कौन–सा कर्म ठीक नही हुआ और अब उसका प्रायश्चित करके उसके बुरे प्रभाव को समाप्त या कम किस प्रकार किया जा सकता है।